कोथागुड़ेम। तेलंगाना राज्य के प्रथम डिप्युटी सी.एम. डॉ.राजइय्या को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.महेश्वरी।

पन्ना-म.प्र। कैबिनेट मंत्री कुसुम सिंह मेहदेले का स्वागत करने के पश्चात् ब्र.कु.सीता तथा अन्य।

पाटन-गुज.। सिनियर सिटीज़न प्रेसिडेन्ट पूनम भाई, ब्र.कु.नीलम का अभिवादन करते हुए।

रीवा। सेवाकेन्द्र में आयोजित आध्यात्मिक कार्यक्रम में मंचासीन शिवराज सिंह वर्मा,अपर कलेक्टर, डॉ. ई.के.मिश्रा,समाजसेवी एवं डेन्टल सर्जन, ब्र.कु.निर्मला तथा अन्य।

पतलीकुहल-मनाली(हि.प्र.)। 'मेरा भारत व्यसनमुक्त भारत' राष्ट्रीय अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए महिला आयोग की पूर्व अध्यक्षा धनेश्वरी देवी, ब्र.कु. डॉ. भारती, ब्र.कु. डॉ. लेखराम, ब्र.कु. डॉ. मेघना, ब्र.कु. साधना व अन्य।

ओ.आर.सी-गुड़गांव। 'आदर्श ग्रामीण नेतृत्व पंच-सरपंच' आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. आशा, विधायक गंगाराम,पटौदी, गजेन्द्र चौहान,प्रतिनिधि,जिला परिषद अध्यक्ष, ब्र.कु. जयप्रकाश, ब्र.कु. राजकुमारी, ब्र.कु. राजेन्द्र तथा अन्य।

जो युद्ध जैसी परिस्थिति में स्थिर 'वही युधिष्ठिर'

दैवी प्रवृत्ति अर्थात् जो धर्म पक्ष का वाचक है जिसके अंतर्गत पाण्डव समाए हुए हैं या पाण्डवी वृत्ति समायी हुई है। संसार में आज पाण्डव कितने हैं अर्थात् भगवान से प्रीत करने वाले कितने प्रतिशत में हैं? इसलिए दिखाया गया है कि सौ कौरव और पांच पाडव अर्थात् मुट्ठी भर। दुनिया को अगर सौ प्रतिशत में ले लिया जाए तो उसमें से भगवान से प्रीत करने वाले संसार में कितने लोग होंगे? सिर्फ पाँच प्रतिशत लोग ही सच्चे रूप से ईश्वर से प्रीत करते हैं, स्वार्थ से नहीं। सच्चे दिल से जो ईश्वर से प्रीत करता है, वही धर्म पक्ष का वाचक है या वही पांडव है। उसमें भी युधिष्ठिर कितने प्रतिशत लोग होंगे? युधिष्ठिर का अर्थ है आध्यात्मिक व्यक्तित्व वाला। युद्ध जैसी परिस्थिति में भी जो स्थिर बुद्धि, संतुलित बुद्धि रहे, उसको कहते हैं युधिष्ठिर। आज समय ऐसा है जहाँ जीवन में हर व्यक्ति को संघर्ष करना पड़ रहा है। जैसे जीवन ही एक युद्ध बन गया है, यह जीवन एक ऐसा कर्म क्षेत्र है जहाँ हर समय इंसान को नित्य युद्ध करना पड़ता है। ऐसी युद्ध जैसी परिस्थिति में कई बार मनुष्य अपना मानसिक संतुलन खो देता है। कितने प्रतिशत मनुष्य ऐसे होंगे जो युद्ध जैसी परिस्थिति में भी अपना मानसिक संतुलन बनाए रखते हैं? सिर्फ एक प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो अपना मानसिक संतुलन बनाए रखते हैं।

दूसरे नम्बर पर है, भीम जो आत्म-शक्ति से सम्पन्न है। जिसके पास आत्म-बल है, जिसके सामने कोई भी परिस्थिति ठहर नहीं सकती। उसके अंदर जड़ से उखाड़ देने की क्षमता है, इतना विल पावर था उसके पास तभी तो उसे भीम कहा गया। आज की दुनिया में इतने आत्मि-शक्ति से युक्त या इतना मनोबल धारण करने वाले कितने लोग होंगे? सिर्फ एक प्रतिशत।

ठीक इसी प्रकार, तीसरे नम्बर पर है अर्जुन। अर्जुन अर्थात् जिसमें अर्जन करने का भाव है। अर्जुन को भगवान ने जो कहा उसे उसने 'हाँ जी' करके उसको स्वीकार किया फिर उसे कर्म में लाया। ऐसे अर्जन करने वाले का भाव भी कितने प्रतिशत लोगों में होता है। सिर्फ एक प्रतिशत लोग ऐसे हैं, जो अर्जन करना भी और कराना भी जानते हैं।

चौथा है, नकुल। नकुल अर्थात् जो नियमों में चलने वाला जिसको आज की दुनिया में कहते हैं सिद्धांतवादी व्यक्ति, जो अपने जीवन को संयमित रखता है। ऐसे लोग भी आज के संसार में कितने हैं, केवल एक प्रतिशत।

पाँचवा है, सहदेव। सहदेव अर्थात् जो हर कार्य में अपना सहयोग देता है। विशेषकर जहाँ कहीं शुभ कार्य होता है, धार्मिक कार्य होता है, आध्यात्मिक कार्य होता है वहाँ जो नित्य अपना सहयोग देने वाले हैं, बिना किसी अपेक्षा के, ऐसे सहदेव भी आज के संसार में कितने प्रतिशत होंगे? सिर्फ एक प्रतिशत और वो सहयोग भी किस आधार से दे सकते हैं, उन्हें दिव्य दृष्टि का वरदान था जिनके पास दिव्य बुद्धि थी। उस दिव्य बुद्धि से वो यथार्थ को अच्छी तरह से देख सकते थे। इसीलिए उसको सहयोग देने वाला देवता अर्थात् 'सहदेव' कहा गया।

ये पाँच पाण्डव हैं, आज की दुनिया में। आज हम सभी कहाँ हैं? क्या हम युधिष्ठिर हैं? भीम है? अर्जुन हैं? नकुल हैं या सहदेव हैं? आज तो हम यही कहेंगे कि आप सभी यर्थात् रूप में अर्जुन हैं। ऐसे अर्जुनों के प्रति ही श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान है। जो कि स्वयं भगवान के श्री मुख से, श्रेष्ठ वचन सुनने का परम सौभाग्य प्राप्त किया है। इसके विपरीत देखा जाए तो कौरव हैं।

कौरव अर्थात् जो अधर्म पक्ष का वाचक है। धृतराष्ट्र अर्थात् जो राजसत्ता बाहुबल या भूमिबल के अहंकार से युक्त है। गांधारी अर्थात् जो देखते हुए भी देखना नहीं चाहती थी। इसीलिए उसने आँखों पर पट्टी बाँध ली थी। आज के समय में ऐसे धृतराष्ट्र और गांधारी देखने को मिलते हैं और उनके सौ पुत्र भी। बहुत आश्चर्य की बात है कि एक बार मैं किताब पढ़ते-पढ़ते कौरवों के सौ नाम के सम्पर्क में आई।जो कौरव थे उनके नाम की शुरुआत 'दु' से होती थी। जैसे दुर्योधन – जिसने धर्म का दुरुपयोग किया। आज समाज में एसे बच्चे देखने को मिलते हैं।

दु:शासन - जिसके जीवन में अनुशासन नाम की चीज़ ही न हो। ऐसे दु:शासन भी देखने को मिलते हैं। दुशाल, दुर्मुख, दुष्कर्ण,अर्थात 'दु' से ही सारे नाम देखने को मिलते हैं। जिसका भावार्थ है 'दु:ख देने वाला या जिसमें 'दुष्टता' का भाव समाया हो। -क्रमश:

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

साक्षीपन क्या है ?

- ब्र.कु. सूर्य, मधुबन

जबकि हमें यह ज्ञात है कि सभी आत्माओं को एक निश्चित पार्ट (अभिनय) मिला हुआ है। उसका वही पार्ट (अभिनय) सत्य है। तो हम सभी मनुष्यात्माओं के पार्ट (अभिनय) का आनन्द लें। हमें सभी मनुष्यात्माओं का पार्ट (अभिनय) अच्छा लगे। परन्तु जहाँ स्वार्थ की भावना काम करती है, वहाँ हम दूसरों के पार्ट (अभिनय) में कमियाँ निकालने लगते हैं। जहाँ ईर्ष्या अपना काम कर रही है, वहाँ हमें दूसरों का अच्छा अभिनय भी अच्छा नहीं लगता ! इसलिए जो कुछ भी हो रहा है, वही सत्य है, वही कल्याणकारी है, जिस समय होना चाहिए, वही होना चाहिए – ऐसी ज्ञान-स्वरूप स्थिति में रहना ही साक्षीपन की स्थिति है। जीवन में कुछ भी घटित हुआ हो, परन्तु किसी का पार्ट (अभिनय) देखकर मन विचलित न हो, यही साक्षीपन की स्थिति है।

अपने कर्म करते हुए, दूसरे के कर्मों को सुधारते हुए, दूसरों को शिक्षाएँ देते हुए व अपनी जिम्मेवारियों को पूर्ण करते हुए भी साक्षी भाव में रहें। साक्षी भाव में रहकर स्वयं का श्रेष्ठ पार्ट (अभिनय) बजाने से कभी भी मन भारी व उदास नहीं होगा। परन्तु ध्यान रहे कि यदि मन में किसी भी व्यक्ति के प्रति नफरत है अथवा लगाव है तो साक्षीपन की स्थिति खत्म हो जाएगी। हमें तो साक्षी भाव में स्थित होकर महाविनाश को देखना है। यदि लम्बे समय तक हमने साक्षी भाव की स्थिति नहीं अपनाई है तो विनाश से उत्पन्न भय हमें अवश्य ही अपनी ओर प्रभावित करेगा और हम अपनी तपस्या में स्थिर नहीं रह सकेंगे। इसलिए अपनी जिन्दगी में व दूसरों की जिन्दगी में कुछ भी होता देखकर न मन में प्रश्न उत्पन्न हो और न ही आश्चर्य की स्थिति उत्पन्न हो - यही साक्षी भाव की स्थिति है।

ऐसा साक्षी भाव अपनाने के लिए हमें निरन्तर ज्ञान की स्मृतियों में रहना चाहिए। जब लोग विनाश की आपदाओं में हाहाकार करें तो हमें याद रहे कि सभी मनुष्यात्माएँ अपने कर्मों की सजा भोगकर, पावन बन रही हैं। प्राकृतिक आपदा जब विनाश का ताण्डव नृत्य करे तो हमें याद रहे कि प्रकृति का शुद्धिकरण हो रहा है। हमें यह भी याद रहे कि हमने ही तो महाकाल को बुलाया है।

तपस्वी कहीं भी उलझा हुआ न हो।

तपस्या निर्बन्धन स्थिति है। मन की उलझन तपस्वी के लिए बड़ा बन्धन है। कर्म भी तपस्या में यदि बन्धन बन रहे हैं तो ऐसा तपस्वी बन्धनों की रस्सियों में बंधकर असफल हो जाता है। इसलिए तपस्या के श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वालों को चाहिए कि वे स्वयं को कहीं भी उलझाएँ नहीं। पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन, उलझनों व कर्म बन्धनों में न बीते। ज्ञान का प्रकाश पाकर और भगवान का साथ पाकर भी किसी ने स्वयं को उलझनों से मुक्त रखना न सीखा तो समझो कि उसने कुछ भी नहीं सीखा।

अत: हम सम्बन्धों में न अटकें, न कर्म हमें बाँध सकें और न ही जीवन की समस्याएँ हमें अपने जाल में उलझा सकें । इसके लिए हमें चाहिए – सरल स्वभाव। जटिल स्वभाव, कटु स्वभाव, मनुष्य को सहज ही उलझा देता है । अब यह हमारे स्वयं के ऊपर है कि हम स्वयं को उलझाएं अथवा मुक्त रखें। भला विचार करें कि क्या तपस्वी को कोई बन्धन बांध सकता है? सम्पूर्ण विश्व को मुक्ति का मार्ग दिखाने वाले क्या कहीं उलझ सकते हैं !

क्षमा तपस्वियों की शोभा है, यही उनका बल है। तपस्वी को कभी भी ऐसा नहीं लगता कि वह बहुत सहन करता है। हम दूसरों के कटु बोल सुनकर खुशी से सहन करें व उन्हें क्षमा कर दें तो कभी भी हमारा चित्त प्रतिशोध की भावना में नहीं जलेगा। जो सहनशील बने, वे महान बन गए। तपस्वी को क्रोध व अहंकार की अग्नि नहीं जलानी चाहिए। शीतल चित्त से इस अग्नि को इतना शान्त कर दें कि तेज तूफान भी इसे भड़का न सके। वही हमारी तपस्या की प्रत्यक्ष सिद्धि होगी।

इस प्रकार हम महान तपस्वी बनकर संसार से विकारों की अग्नि को शीतल करें। हमें तपस्या करने का सर्वश्रेष्ठ अवसर प्राप्त हुआ है। हमारी तपस्या विश्व की समस्याओं का निदान करेगी, हमारी तपस्या अनेक भटके हुए तपस्वियों को सत्मार्ग दिखाएगी, हमारी तपस्या अनेकों के कष्ट मिटाएगी। इसलिए हम आराम परस्त न बनें। तपस्वी कभी भी नींद के वश नहीं होते, तपस्वी कभी अलबेले नहीं होते। हमें अपनी तपस्या से सर्वप्रथम अपने जीवन को आलोकित करना है, ताकि हमारा सम्पूर्ण अन्धकार मिट जाए, हमारे चित्त में छुपा हुआ भय भी नष्ट हो जाए और हमारा जीवन विश्व के लिए लाइट हाउस बन जाए। तो आओ ब्रह्मा-वत्स, तपस्वी जीवन बनाकर सम्पूर्णता की ओर चलें।